शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'पर्यावरण महाकाव्य' में भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि और जैन धर्म

डॉ.अनुपमा छाजेड़
शोध निर्देशक
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

भूमिका

आधुनिक विश्व में जब पूरी मानवता पर्यावरण संकट जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक असंतुलन आदि मुद्दों से जूझ रही है, ऐसे समय में श्रमणाचार्य डॉविभवसागर मुनिराज ने 'पर्यावरण महाकाव्य' का सृजन किया है जो सांस्कृतिक, नैतिक और आत्मिक संदर्भ प्रस्तुत करता है। यह काव्य न केवल पारिस्थितिकी चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भावनात्मक अपील तथा व्यावहारिक मार्गदर्शन देता है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक-धार्मिक विमर्श के केंद्र में 'पर्यावरण' की प्रतिष्ठा करता है। महाकाव्य के अनुसार पर्यावरण केवल भौतिक तत्त्वों (वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु-पक्षी) का संकलन नहीं, बल्कि एक जीवित, सह-अस्तित्व, दया और अहिंसा-प्रधान जीवन व्यवस्था का आधार है। जैन दर्शन का मूल 'परस्परोपग्रहोजीवानाम्' अर्थात् प्रत्येक जीव एकदूसरे के कल्याण के लिए है, यही पर्यावरण रक्षा का आध्यात्मिक सूत्र है। 'पर्यावरण महाकाव्य' में बार-बार दया, संयम, विवेकपूर्ण उपभोग, अहिंसा और अपरिग्रह को पर्यावरणीय संतुलन एवं संरक्षण से जोड़ा गया है। जैनाचार्यों, साधुओं और साध्वियों का संयमी, न्यूनतम संसाधनों वाला जीवन व्यावहारिक पर्यावरण रक्षण का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। महाकाव्य में यह भी प्रतिपादित है कि भारतीय संस्कृति के पर्वत्योहार, लोक परंपराएँ, लोक साहित्य, सभी की नींव प्रकृति और पर्यावरण पर ही है। 'वन है तो संस्कृति है' जैसे संदेशों के माध्यम से ग्रामीण जीवन, सामूहिकता और कृषि आधारित भारतीय जीवन के पर्यावरणीय पक्षों को उजागर किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'पर्यावरण महाकाव्य' में आध्यात्मिक और वैज्ञानिक तत्वों पर विचार किया गया है।

'पर्यावरण महाकाव्य' का परिचय

'पर्यावरण महाकाव्य' एक काव्यात्मक ग्रंथ है, जिसमें 1000 से अधिक संस्कृत व हिंदी मिश्रित श्लोकों के माध्यम से पर्यावरणीय संकट की गंभीरता, कारण और समाधान प्रस्तुत किए गए हैं। इसकी रचना श्रमणाचार्य डॉ.विभवसागर मुनिराज ने की है, जो एक विद्वान दार्शनिक, पर्यावरण-संवेदनशील संत एवं भावनात्मक विचारक हैं।

महाकाव्य के आरंभिक श्लोकों में ही कवि यह स्पष्ट करते हैं कि :

"प्रकृति माता है, उसका दोहन नहीं, संरक्षण ही जीवन है।"

यह महाकाव्य सिर्फ संकट का वर्णन नहीं करता, बल्कि यह एक चेतावनी है, एक प्रस्तावना है, और एक आध्यात्मिक समाधान भी प्रस्तुत करता है। इसमें जैन धर्म के सिद्धांतों : अहिंसा, अपरिग्रह, संयम, जीवदया, सहअस्तित्व को पर्यावरणीय सन्दर्भ में विस्तारित किया गया है।

पर्यावरण का मूलभाव और परिभाषा

पर्यावरण शब्द 'परि' (चारों ओर) 'आवरण' (घेरा या आवृत करनेवाला) से बना है। 'पर्यावरण' केवल हमारे चारों ओर फैले हुए भौतिक तत्वों

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु-पक्षी, सूक्ष्म जीव का संकलन नहीं, बल्कि यह एक सजीव, बुद्धिसम्पन्न, दयाशील एवं सजग तंत्र है। जैन दृष्टिकोण में प्रत्येक जीव स्वयं एक संपूर्ण ब्रह्मांड और उसका पर्यावरण है।

महाकाव्य की संज्ञा में

'प्रकृति में उपसर्ग नहीं, स्वभाव है।"

यहाँ पर्यावरण को प्राकृतिक आवरण, सुरक्षा कवच, जीवन-संचारक तत्त्व और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखा गया है।

'पर्यावरण महाकाव्य' में परिभाषित पर्यावरण

जीवन का आधार

संस्कृति का सुरक्षा चक्र

प्रकृति का संरक्षण कवच

जैविक-अजैविक तत्त्वों का पारस्परिक समुच्चय

प्रत्येक जीव के अस्तित्व और विकास की शर्त

जैन दर्शन में पर्यावरण : मूल अवधारणा

जैन दर्शन में देव, वनस्पति, जल, वायु, अग्नि सभी में जीव का समावेश है। 'परस्परोपग्रहोजीवानाम्' (सभी जीवों का पारस्परिक कल्याण) सूत्र पर्यावरण चिंतन का आधार है।

जैन आगमों व श्रुतों में स्पष्ट कहा गया है :

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, सबमें जीव का निवास है।

प्रत्येक जड़-अजड़, स्थूल-सूक्ष्म, दृश्य-अदृश्य तत्त्व जीवन के लिए अनिवार्य है।

किसी एक के हनन में किसी न किसी का हित बाधित होता है।

जीवदया, अहिंसा, त्याग, संयम, अप्रमाद का अभ्यास ही पर्यावरण की रक्षा का मार्ग है।

'पर्यावरण महाकाव्य' बार-बार इन जैन सांस्कृतिक मूल्यों को रेखांकित करता है

'प्रकृति माँ स्वरूपा है, उसका विवेकपूर्ण, संयमित उपभोग ही अहिंसा है, संहार करना हिंसा है।"

भारतीय संस्कृति और पर्वों में पर्यावरण

भारतवर्ष का प्रत्येक पर्व, उत्सव, अनुष्ठान : होली, दिवाली, रक्षाबंधन, वट सावित्री, गोवर्धन पूजा, छठ, पर्युषण, बसन्तोत्सव, हरेला, वृक्षारोपण महोत्सव इत्यादि सभी का लक्ष्य पारिस्थितिकीय संतुलन, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, जनजागरूकता और प्रतिज्ञा रहा है।

जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से अधिकांश को तीर्थ, ज्ञान, दीक्षा, निर्वाण वन, वृक्ष या प्राकृतिक स्थल पर प्राप्त हुआ, यह दर्शाता है कि पर्यावरण' अध्यात्म व साधना की भूमि है।

जैन दृष्टिकोण के विश्लेषण में श्रमण संस्कृति (निग्रंथ, वनवासी, संयमी जीवन) में जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं, अहिंसा, जीवदया और संयम से पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलती है। महाकाव्य में तीर्थंकरों, मुनियों और संतों की निर्विकारी, सादगी-संयमपूर्ण जीवनशैली, प्रकृति के प्रति गहन सम्मान और संरक्षण को केंद्रस्थ किया गया है। उदाहरणार्थ मयूरपंख से निर्मित पिच्छिका, ताड़पत्रीय ग्रंथ निर्माण, कमंडलु प्रथा आदि बिना प्रकृति को क्षति पहुँचाए संसाधनों के उपयोग का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

कविता के माध्यम से संदेश

वन है तो हरियाली है, वन है तो दिवाली है, वन है तो संस्कृति है।"

इसमें बताया गया है कि प्रकृति के बिना न तो पर्व उत्पन्न हो सकते हैं और न संस्कृति टिक सकती है।

पर्यावरण संकट और कारण

आज औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या विस्फोट और भौतिक उपभोगवाद ने प्राकृतिक

संसाधनों की सीमाओं को तोड़ा है। वन-क्षय, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता का ह्रास, रोग, जल संकट आदि समस्याएँ सर्वत्र व्याप्त हैं।

महाकाव्य में मानव की स्वार्थपरता, अनुचित भोगवृत्ति, वनों की अंधाधुंध कटाई, जल-थल-वायु प्रदूषण की तीव्र निंदा की गई है। इसमें बताया गया है कि 'प्राकृतिक आपदा' जैसे भूकंप, बाढ़, चक्रवात, भूमि कटाव का मूल कारण मानवजनित पर्यावरण विनाश ही है। उदाहरणस्वरूप चिपको आन्दोलन का उल्लेख सुन्दर लाल बहुगुणा जैसे पर्यावरण शहीदों की चर्चा उल्लेखनीय है।

आज विश्व जिस पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है उसके मूल में वनों की अंधाधुंध कटाई, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, संसाधनों का अनुचित दोहन, प्राकृतिक जलवायु चक्र से छेड़छाड़, मानवीय लालच, उपभोक्तावाद आदि हैं। 'पर्यावरण महाकाव्य' स्पष्ट करता है कि प्राकृतिक आपदाएँ (भूकंप, बाढ़, सूखा), जैव विविधता का विनाश, जलवायु परिवर्तन ये सभी मानवकृत विकृतियों की परिणति हैं।

'विकृति विकार है। प्रकृति स्वीकार है, विकृति अस्वीकार है।"

जैन धर्म में पर्यावरण का रक्षा-मूल्य

जैन धर्म का सबसे बड़ा योगदान 'अहिंसा' का व्यावहारिक पक्ष है।

जैन गुरुओं, साधुओं का संयमपूर्ण, न्यूनतम संसाधनों वाली जीवनशैली (मयूर पिच्छिका, कमण्डलु, ताड़पत्र ग्रंथ, सीमित जल-भोजन) पर्यावरण के साथ सह-अस्तित्व की मिसाल है।

पंचमहाव्रत अपरिग्रह, अपरिमित वस्तुओं का त्याग और सभी जीवों के प्रति दया, केवल सिद्धांत नहीं, पर्यावरण संरक्षण का सर्वाधिक प्रभावी अभ्यास भी है।

शुद्ध वायु, शुद्ध जल, शुद्ध भूमि में ही तप, साधना, ध्यान, ज्ञान संभव है। तीर्थंकरों का वन व्रत पर्यावरण-धर्म के सनातन सूत्र हैं।"

प्रकृति, संस्कृति और स्वस्थ समाज

प्रकृति ही संस्कृति की जननी है

जब प्रकृति हरी-भरी रहती है, तभी संस्कृति में आनंद, स्वास्थ्य, दिवस-त्योहार आते हैं।

ग्रामीण जीवन, गाँव का सौहार्द, मानव-पशु-पक्षी, खेत-खलिहान, निश्छलता, सामूहिकता ये सभी प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में रचे-बसे हैं।

लोकगीत, दोहे, भजन, गीतों में वृक्ष, नदी, पर्वत, जीव-जंतु और पर्यावरण की महत्ता का सौंदर्य मिलता है। महाकाव्य में 'अपना गाँव अपना पर्यावरण' दर्ज है, ग्रामीण भारत में आज भी सामूहिक वृक्षारोपण, जलस्रोत संरक्षण, पारंपरिक चिकित्सा के प्रयोग से पर्यावरण की सांस्कृतिक सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

स्वास्थ्य, औषधि और पर्यावरण

स्वास्थ्य एवं औषधि के क्षेत्र में महाकाव्य ने औषधीय पौधों, प्राकृतिक चिकित्सा, शुद्ध जलवायु, जैव विविधता की रक्षा को स्वस्थ जीवन का आधार बताते हुए 'शुद्ध पर्यावरण संपूर्ण आरोग्य' को सिद्धांत रूप में प्रस्तुत किया है।

'पर्यावरण महाकाव्य' में प्रकृति-प्रदत्त औषधियों (तुलसी, एलोवेरा, अमलतास, अनार, अमरूद, कपास, बेल, त्रिफला, अदरक, गुड़, जड़ी-बूटी आदि) के विवरण व व्यावहारिक प्रयोग दिए गए हैं :

कच्चे आम के प्रयोग से लू से बचाव

तुलसी का काढ़ा : वायरल व डेंगू जैसी बीमारियों में

अमलतास : मुख्यतः ज्वर में

अनार : पित्त शमन, आंतरिक शक्ति

प्याज, नीम, भृंगराज, काली मिट्टी : पेट, त्वचा, वायु व शारीरिक संतुलन को बनाए रखने के लिए पर्यावरण की शुद्धता, विविधता और स्वास्थ्य इनका सीधा संबंध बताया गया है।

"शुद्ध वायु रोग शमन करती है, अशुद्ध वायु रोग उपजाती है।"

शिक्षा, नीति और व्यवहार

महाकाव्य में पर्यावरण-शिक्षा का व्यावहारिक पक्ष रेखांकित है :

प्राचीन गुरुकुलों में पौधारोपण, पशुपालन, श्रमदान, जलस्रोत रक्षा, बीज बोना, सीधा-सीधा पर्यावरणीय व्यवहार।

आधुनिक पाठ्यक्रम में भी पर्यावरण-शिक्षा को सैद्धांतिक के साथ-साथ प्रयोगात्मक बनाना चाहिए।

'एक व्यक्ति एक वृक्षष्कृव्यावहारिक नीति का समर्थन किया गया है।

'पर्यावरण शिक्षा सिर्फ ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन की आदत बननी चाहिए।"

समाधान : समस्या हम हैं, समाधान हम हैं

महाकाव्य का केंद्रीय संदेश

सभ्य और सजग नागरिक वही है, जो अपने पर्यावरण की रक्षा करता है।

सामाजिक स्तर पर : जन भागीदारी, सामूहिक वृक्षारोपण, पौधारोपण, कचरा प्रबंधन, पटाखामुक्त दीवाली, स्वच्छता अभियान आवश्यक है।

नीति और प्रशासनिक स्तर पर : संविधान में पर्यावरण संरक्षण को स्पष्ट स्थान देना, हरित नीति बनाना, विकास में पारिस्थिति की विचारना।

समस्या हम हैं तो समाधान भी हम हैं : यही पर्यावरण के प्रति सही दृष्टिकोण है।

काव्यशैली में पर्यावरण संदेश

'पर्यावरण महाकाव्य' का परेशानिक सौंदर्य :

'पर्यावरण महाकाव्य' में कविता, गीत, श्लोक, उपमाओं के माध्यम से पाठ को जनमानस की भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पर्यावरणीय चेतना सहज व सर्वसुलभ हो सके। जैन परंपरा, इतिहास, चिपको आन्दोलन, समवसरण, तीर्थंकरों के वनवास, इन सब उदाहरणों के माध्यम से लेख में धार्मिक-सांस्कृतिक समावेशिता और वैज्ञानिक सोच का समन्वय उपस्थित है।

हमको पेड़ लगाना है, पर्यावरण बचाना है, जैसे गीत, दोहे, जन-जन में चेतना जगाने के लिए उपयुक्त है।

गाँव, पर्व, त्योहार, पुत्र-वृक्ष, प्रकृति-पूजा, वन्य प्राणी, आचार, स्वास्थ्य, चिकित्सा, विज्ञान सभी में पर्यावरण का समावेश किया गया है।

समवसरण, तीर्थंकर, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक उदाहरण

चिपको आंदोलन : जीवन देकर वृक्षरक्षण

तीर्थंकरों की दीक्षा, ज्ञान और निर्वाण स्थल : वन, पर्वत, नदी, झरने

समवसरण : जैन तीर्थंकरों की सभा, जहाँ सभी जीवों को समान ज्ञान-संवाद मिलता है, प्राकृतिक समरसता का आदर्श

जैन परंपरा के मयूरपिच्छिका, ताड़-पत्र ग्रंथ, कमण्डलु जैसे उपकरणों का पर्यावरण-अनुकूल प्रयोग

धार्मिक एवं सांस्कृतिक समावेशिता

'अहिंसा', 'जीवदया', 'अपरिग्रह', 'दया' के सूत्र, भारतीय साहित्य, धर्म और नीति में पर्यावरण

रक्षण के लिए समावेशित है। महाकाव्य ध्वनित करता है :

धर्मस्य मूलं दया 'धर्म का आधार दया और करुणा ही पर्यावरण संरक्षण का श्रेष्ठ उपाय है।'

किसी भी प्रकार की हिंसा :सीधे-सीधे पर्यावरण-विनाश है। बलात्कार केवल शरीर का नहीं होता, प्रकृति के साथ भी होता है :यह विचार महाकाव्य में पहली बार सूक्ष्म वाणी में मिलता है।

पर्यावरण पंचांग, फिल्म, लोक साहित्य

आर्द्रभूमि दिवस, जल दिवस, पृथ्वी दिवस, जैव विविधता दिवस, वन्य-जीव दिवस, पर्यावरण दिवस, पर्वत दिवस, मरुस्थलीकरण दिवस : सभी का एकमात्र लक्ष्य संरक्षण, जागरूकता व सहभागिता

पर्यावरण जागरूकता हेतु फिल्मों, लोक साहित्य, कथा-कहानियों का भी उल्लेख

कवि ने एक संपूर्ण 'पर्यावरण पंचांग' भी प्रस्तुत किया है, जिसमें आर्द्र भूमि, जल, मौसम, जैव विविधता, महासागर, मरुस्थलीकरण, प्रकृति संरक्षण, ओजोन, पशु कल्याण, आपदा प्रबंधन से जुड़े दिवस, सप्ताह शामिल हैं, जिससे समाज में जागरूकता रहे।

प्रतीक दृष्टान्त

नारियल को सर्वोत्तम फल बताया गया, क्योंकि उसका आवरण मजबूत है, जो उसे सड़ने, घुनने, कीड़ा पड़ने से बचाता है।

'एक वृक्ष दस पुत्र बराबर : वृक्ष को परिवार से भी बढ़कर बताया है।

आधुनिक पारिस्थितिक संकट

औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, मोबाइल रेडिएशन, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, अनियंत्रित संसाधन प्रयोग ये सब नई पीड़ा हैं, जिनके उपचार के लिए कवि ने 'प्राकृतिक उपायों' को मूलमंत्र माना है। आधुनिक पर्यावरण संकटों : वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जैव विविधता का नुकसान, जलवायु परिवर्तन के मूल कारणों को मानव-केन्द्रित उपभोक्तावाद तथा प्रकृति-विरोधी दृष्टिकोण में रेखांकित किया गया है। 'विकृति विकार है प्रकृति स्वीकार है' युक्ति के साथ समस्या का विश्लेषण कर समाधान की ओर मार्ग दिखाया गया है।

'पर्यावरण की आवाज़ भारतीय फिल्मों तक पहुँची फिल्म 'इरादा', बोनानी', 'कड़वी हवा' आदि का ज़िक्र।

समकालीन चुनौतियाँ एवं नवाचार

आज मोबाइल रेडिएशन, शहरीकरण, तकनीकी प्रदूषण, जलवायु असंतुलन, महामारी, ओजोन क्षरण, नये-नये संकट हमारे सामने उपस्थित हैं। 'पर्यावरण महाकाव्य' में इनके ज्ञान, समाधान और नवाचार का आह्वान है : जैव-खाद, सौर ऊर्जा, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वच्छता, प्लास्टिक मुक्त अभियान सांस्कृतिक-वैज्ञानिक नवोन्मेष दिया गया है।

निष्कर्ष

'पर्यावरण महाकाव्य' केवल भावनात्मक कविता-संग्रह नहीं, बल्कि विज्ञान, संस्कृति, नैतिकता एवं नीति का एकीकृत संदेश है जिसका केंद्रीय सूत्र है 'समस्या हम हैं, समाधान भी हम हैं।' अहिंसा, दया, संयम, व्यावहारिक शिक्षा, प्राकृतिक चिकित्सा तथा जनभागीदारी के माध्यम से स्थायी एवं सशक्त पर्यावरण रक्षण की प्रेरणा दी गई है। समकालीन चुनौतियों के सापेक्ष, भारतीय दर्शन एवं परंपरा को आधुनिक संदर्भों में आत्मसात कर यह काव्य मानवता का भविष्य सुरक्षित करने हेतु मार्गदर्शक बनता है।

अतः जीवन, संस्कृति और पर्यावरण, तीनों का समन्वित संरक्षण ही नूतन भारत की संजीवनी और मानव-जीवन का श्रेष्ठ धर्म है।

पर्यावरण रक्षा केवल सरकारी, प्रशासनिक जिम्मेदारी नहीं, प्रत्येक मानव का सर्वोपरि, नैतिक व बौद्धिक कर्तव्य है।

जैन धर्म, भारतीय संस्कार, लोक अनुभव, वैज्ञानिक प्रयोग सबका समन्वय ही भविष्य की गारंटी है।

हम प्रकृति की संतान हैं, उसका संवर्द्धन ही मानवता का संवर्द्धन है।

'प्रकृति माँ का आँचल हमारी संस्कृति, सभ्यता और स्वास्थ्य का जीवनदायी आधार है।

अतः पेड़ बचाएं, जल बचाएं, पर्यावरण बचाएं यही जीवन, यही धर्म, यही संस्कृति है।

अमिट सूत्र

'समस्या हम हैं, समाधान भी हम हैं।

'अहिंसा सर्वजीव दया, ही पर्यावरण रक्षा का सर्वोपरि मार्ग है।

'प्राकृतिक उपचार और संयम, नव भारत की संजीवनी है।

'पर्यावरण पंचांग पृथ्वी का उत्सव, जीवन की गारंटी।

'पर्यावरण जीवन का प्रस्थान, संस्कृति की पहचान।

संदर्भ ग्रन्थ

पर्यावरण महाकाव्य : श्रमणाचार्य डॉ.विभवसागर मुनिराज

- मुख्य काव्यात्मक स्रोत : श्लोक सं. 18, 56, 203, 601

तत्त्वार्थसूत्र : आचार्य उमास्वाति

- अध्याय 5 : जीव और पर्यावरण संबंध

आगम सूत्र : मूल जैन ग्रंथ

- सावधानेण पाणं पिवेश् : सूत्र वचन

जीवन-दर्शन : आचार्य तुलसी, जैन विश्व भारती

- पृष्ठ 45, संयम और पर्यावरणीय नैतिकता

जैन धर्म और विज्ञान, आचार्य महाप्रज्ञ

- पृष्ठ 78 परिग्रह और ऊर्जा संकट

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण : डॉ.रमेशचंद्र शाह

- पृष्ठ 22, सांस्कृतिक संरक्षण की रणनीति